

कवि परिचय

कबीरदास जी का नाम संत कवियों में सर्वोपरि है। इनका जन्म 1398 ई में वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ। कबीरदास ने स्वयं को काशी का जुलाहा कहा है। इनके विधिवत् साक्षर होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। ये स्वयं कहते हैं मसि कागद छुयो नहि कलम गहि नहि हाथ।”

इनका देहावसान 1518 ई में बस्ती के निकट मगहर में हुआ।

रचनाएँ: कबीरदास के पदों का संग्रह “बीजक” नामक पुस्तक है, जिसमें साखी, सबद एवं रमैनी संकलित हैं।

साहित्यिक परिचय: कबीरदास भक्तिकाल की निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इन पर नाथों, सिद्धों और सूफी संतों की बातों का प्रभाव है। वे कर्मकांड और वेद-विचार के विरोधी थे तथा जाति-भेद, वर्ण-भेद और संप्रदाय-भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन करते थे। कबीर घुमक्कड़ थे। इसलिए इनकी भाषा में उत्तर भारत की अनेक बोलियों के शब्द पाए जाते हैं। वे अपनी बात को साफ एवं दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे “बन पड़ तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर।”

पद

हम तौ एक एक करि जानां ।

दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचानां।

एकै पवन एक ही पानीं एकै जाँति समांनां।

एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोहरा सांनां।

जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटे कोई।

सब घटि अंतरि तूही व्यापक धरै सरूपै सोई।

माया देखि के जगत लुभांनां काहे रे नर गरबांनां

निरभै भया कछू नहि ब्यापै कहैं कबीर दिवांनां। (पृष्ठ 131)

शब्दार्थ

एक-परमात्मा, एक। दोई-दो। तिनहीं-उनको। दोजग-नरक। नाहिंन-नहीं। एकै-एक। पवन-हवा। जोति-प्रकाश। समाना-व्याप्त। खाक-मिट्टी। गढ़े-रचे हुए। भांड़े-बर्तन। कोहरा-कुम्हार। सांनां-एक साथ मिलकर। बाढ़ी-बढ़ई। काष्ट-लकड़ी। अगिनि-आग। घटि-घड़ा, हृदय। अंतरि-भीतर, अंदर। व्यापक-विस्तृत। धरे-रखे। सरूपै-स्वरूप। सोई-वही। जगत-संसार। लुभाना-मोहित होना। नर-मनुष्य। गरबानां-गर्व करना। निरभै-निडर। भया-हुआ। दिवानां-बैरागी।

प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित निर्गुण परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि कबीर के पदों से उद्धृत है। इस पद में, कबीर ने एक ही परम तत्व की सत्ता को स्वीकार किया है, जिसकी पुष्टि वे कई उदाहरणों से करते हैं।

व्याख्या-कबीरदास जी कहते हैं कि हमने तो जान लिया है कि ईश्वर एक ही है। इस तरह से मैंने ईश्वर के अद्वैत रूप को पहचान लिया है। हालाँकि कुछ लोग ईश्वर को अलग-अलग बताते हैं; उनके लिए नरक की स्थिति है, क्योंकि वे वास्तविकता को नहीं पहचान पाते। वे आत्मा और परमात्मा को अलग-अलग मानते हैं। कवि ईश्वर की अद्वैतता का प्रमाण देते हुए कहता है कि संसार में एक जैसी हवा बहती है, एक जैसा पानी है तथा एक ही प्रकाश सबमें समाया हुआ है। कुम्हार भी एक ही तरह की मिट्टी से सब बर्तन बनाता है, भले ही बर्तनों का आकार-प्रकार अलग-अलग हो। बढ़ई लकड़ी को तो काट सकता है, परंतु आग को नहीं काट सकता। इसी प्रकार शरीर नष्ट हो जाता है, परंतु उसमें

व्याप्त आत्मा सदैव रहती है। परमात्मा हरेक के हृदय में समाया हुआ है भले ही उसने कोई भी रूप धारण किया हो। यह संसार माया के जाल में फँसा हुआ है। और वही संसार को लुभाता है। इसलिए मनुष्य को किसी भी बात को लेकर घमंड नहीं करना चाहिए। प्रस्तुत पद के अंत में कबीर दास कहते हैं कि जब मनुष्य निर्भय हो जाता है तो उसे कुछ नहीं सताता। कबीर भी अब निर्भय हो गये हैं तथा ईश्वर के दीवाने हो गये हैं।

विशेष-

1. कबीर ने आत्मा और परमात्मा को एक बताया है।
2. उन्होंने माया-मोह व गर्व की व्यर्थता पर प्रकाश डाला है।
3. 'खाक' और 'कोहरा' में रूपक अलंकार है।
4. अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।
5. सधुक्कड़ी भाषा है।
6. उदाहरण अलंकार है।
7. पद में गेयता व संगीतात्मकता है।

● अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

1. कबीरदास परमात्मा के विषय में क्या कहते हैं?
2. संसार नश्वर है, परंतु आत्मा अमर है-स्पष्ट कीजिए।
3. कबीर ने किन उदाहरणों द्वारा सिद्ध किया है कि जग में एक सत्ता है?